THE GOD'S TOOL KIT



ईश्वर के गुणों को समझना क्यों आवश्यक है?

कार्य-कारण सिद्धांत और सृष्टि की जटिलता और सटीकता के कारण सृष्टिकर्ता का अस्तित्व अत्यंत आवश्यक प्रतीत होता है। बिना सृष्टिकर्ता के सृष्टि का बनना बड़ा असंभव सा प्रतीत होता है। तो फिर ईश्वर के गुणों पर चर्चा करना अत्यंत आवश्यक हो जाता है। क्योंकि विश्व में जितना विवाद ईश्वर के अस्तित्व को लेकर नहीं है, उससे कहीं ज़्यादा विवाद और झगड़े उसके स्वरूप को लेकर हैं। ईश्वर के माने और ईश्वर के ना माने वालों के बीच कभी इतनी लड़ाई नहीं हुई जीतनी ईश्वर के अलग-अलग स्वरूपों में माने वालों में हुई है।

मुसलमान दुनिया भर में उपद्रव और जिहाद कर रहे हैं ताकि वे लोगों का ईमान अल्लाह और उसके नबी मोहम्मद पर ला सकें, भले ही इसके लिए उन्हें कत्लेआम क्यों न करना पड़े। वहीं ईसाई पूरी दुनिया में अपने मिशनरी भेजते हैं ताकि पूरी दुनिया उनके जीसस पर विश्वास करे और उसी की पूजा करें। इसी प्रकार के कई बाबा, पीर और पाखंडी हैं जिनके खुद के भगवान हैं और कुछ तो खुद को ही ईश्वर मानते हैं। उदाहरण के लिए रामपाल जैसे कबीर पंथी जो कबीर को ईश्वर और खुद को उसका नबी बताते हैं। ऐसे हजारों संप्रदाय और मत हैं जो बस दुनिया को अपने मत में लाने में लगे हुए हैं और उनके खुद के मत के ईश्वर पर विश्वास लाने बोलते हैं। वे लोग न सिर्फ अपने-अपने मतों का प्रचार कर रहे हैं, बल्कि अपने से भिन्न मत वालों से लड़ भी रहे हैं। जो इनके मत में न आए, वह इनका शत्रु हो जाता है और ये उसके खून के प्यासे हो जाते हैं।

मुसलमानों द्वारा विश्व भर में काफिरों के खिलाफ किए गए सैकड़ों आतंकवादी हमले और ईसाइयों द्वारा हजारों यहूदी और हिंदुओं का कत्लेआम इन मत-मतांतरों में झगड़े का प्रत्यक्ष उदाहरण है। ऐसे लोग अक्सर मूढ़ बुद्धि होते हैं, इन्हें न तो सत्य से मतलब होता है, न ही सच्चे ईश्वर की खोज से। इनका उद्देश्य बस इनके मत की धारणा को फैलाना होता है। भले ही इनके मत में कितना ही पाखंड हो, कितनी ही अमानवीयता हो, इन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता। इन्हें बस बिना विचार किए अपना मत फैलाना होता है। ये तर्क, विवेक और बुद्धि से अंधे होते हैं और सबको अपनी तरह अंधा बनाना चाहते हैं।

विश्व भर में बहुत कम लोग हैं, जो ईश्वर के वास्तविक स्वरूप को खोजने का प्रयास करते है। अगर दुनिया में लोग ईश्वर और उसके गुणों पर चिंतन करने लगें, तो फिर उनका यह चिंतन मात्र ही उन्हें दुनिया भर के अज्ञान से भरे मतों से मुक्त कर देगा। आवश्यक नहीं सब को ईश्वर मिल ही जाये, पर इस दिशा में किया गया प्रयास भी अज्ञान को भस्म करने के लिये पर्याप्त है। मैं नहीं कहता जो मैं बता रहा हूँ वही परम सत्य है, सत्य बहुत विशाल है। मेरा प्रयास तो बस आपकी

खोज को प्रारंभ करना है। अगर संसार का हर व्यक्ति इस खोज को प्रारंभ कर दे तो दुनिया भर के 80% झगड़े तो ऐसे ही सुलझ जाएंगे। लोग अपने आप मूर्खता भरे मतों से मुक्त हो जायेंगे बस देर एक जिज्ञासा भरे शुद्ध मन की है, जिसे उत्पन्न प्रश्न अग्नि के भाती सभी अज्ञान को जला कर भस्म कर दे, अगर ऐसा हो तो मुसलमान भी जान जाएंगे कि जिहाद कोई ईश्वरीय आज्ञा नहीं है। उनके साथ रहने वाले हिंदू उनके दुश्मन नहीं हैं। इसी प्रकार ईसाई भी यह जान जाएंगे कि जो 'ईसाई नहीं हैं' उनसे नफरत करना कोई धर्म का काम नहीं है। हिंदू भी यह समझ जायेंगे यह जातियाँ मानव रचित हैं इनका कोई मोल नहीं और सभी एक दूसरे को गले लगायेंगे। सभी मत के लोग जब सत्य जानने लगेंगे, तो अपने आप असत्य का त्याग कर देंगे और इस राष्ट्र तथा मानवता की एकता, अखंडता और तरक्की के लिए एकजुट हो जाएंगे।

तो फिर ईश्वर के गुणों की चर्चा प्रारंभ करते हैं ताकि उस ईश्वर के वास्तविक स्वरूप को समझने का एक प्रयास किया जा सके। हम यह चर्चा तुलनात्मक रूप से करेंगे। यह तुलना विश्व के तीन सबसे बड़े मतों के बीच होगी: सनातन वैदिक धर्म (वेद, उपनिषद एवं दर्शन), इस्लाम (क़ुरआन और हदीस) और ईसाईयत (बाइबल) के बीच। सर्वप्रथम हम स्वतंत्र बुद्धि से ईश्वर के गुणों पर विचार करेंगे, फिर उसकी तुलना तीनों से करेंगे और देखेंगे किसमें कितनी सत्यता है। अगर हम इन तीनों की सत्यता का परीक्षण कर पाए, तो फिर हम विश्व के किसी भी मत का परीक्षण कर सकेंगे। चलिए फिर खोज को प्रारंभ करते हैं।

AJAY ARYA

ईश्वर के मुख्य ११ गुण

ईश्वर के गुणों पर तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए पहले हमें जिन प्रमाणों का हम सहारा लेने वाले हैं, उनकी समझ होनी आवश्यक है। मुसलमान कुरान को अपनी खुदाई किताब मानते हैं और उसी के अनुसार अपने अल्लाह के स्वरूप को परिभाषित करते हैं। मुसलमान कुरान के साथ मुहम्मद की कही हर बात को भी परम प्रमाण मानते हैं, जो हदीसों में प्राप्त होती है। कुरान और हदीस में अल्लाह के संबंध में कई कहानियाँ देखने को मिलती हैं, और उन कहानियों से ही अल्लाह के स्वरूप को ठीक-ठीक समझा जा सकता है। इस्लाम के अनुसार जब भी मुहम्मद के जीवन में कोई घटना होती थी, तब अल्लाह अपनी आयतें उतारता था और लोगों को उपदेश दिया करता था।

इसी प्रकार, ईसाइयों की किताब बाइबिल में भी उनके खुदा यहोवा और उसके पुत्र जीसस के विषय में अनेक कहानियाँ देखने को मिलती हैं, जिनसे यहोवा और जीसस के स्वरूप को समझा जा सकता है। वेदों में इतिहास न होने के कारण ईश्वर के संबंध में कुरान और बाइबिल की तरह कोई किस्सा-कहानी देखने को नहीं मिलती है। वेदों में सिर्फ ईश्वर के स्वरूप का वर्णन ही प्राप्त होता है। इसी कारण से वेदों में ईश्वर के विषय में किया गया उपदेश ही उसके गुणों को परिभाषित करता है। वहीं, कुरान और बाइबिल में हम उपदेश के साथ-साथ अल्लाह और यहोवा के कारनामों से भी उनके स्वरूप का ज्ञान प्राप्त करते हैं।

अब हम ईश्वर के गुणों पर चर्चा प्रारंभ करते हैं।

1. सृष्टिकर्ता

हम यह जान चुके हैं कि सृष्टि के होने के लिए सृष्टिकर्ता आवश्यक है। क्योंकि बिना कारण कोई कार्य नहीं होता है। तो इससे ईश्वर का एक गुण सृष्टिकर्ता सिद्ध होता है।

- सनातन धर्म

Yajurveda / 17 / 26

विश्वकर्म्मा विमनाऽआद्विहायाः धाता विधाता परमोत सन्दृक्। तेषामिष्टानि समिषा मदन्ति यत्रा सप्तऽऋषीन् परऽएकमाहुः॥२६॥

पदार्थ : हे मनुष्यो! (विश्वकर्मा) जिसका समस्त जगत् का बनाना क्रियमाण काम और जो (विमनाः) अनेक प्रकार के विज्ञान से युक्त (विहायाः) विविध प्रकार के पदार्थों में व्याप्त (धाता) सब का धारण-पोषण करने (विधाता) और रचने वाला (सन्दृक्) अच्छे प्रकार सब को देखता (परः) और सब से उत्तम है तथा जिसको (एकम्) अद्वितीय (आहुः) कहते अर्थात् जिसमें दूसरा कहने में नहीं आता (आत्) और (यत्र) जिसमें (सप्तऋषीन्) पांच प्राण, सूत्रात्मा और धनञ्जय इन सात को प्राप्त होकर (इषा) इच्छा से जीव (सं, मदन्ति) अच्छे प्रकार आनन्द को प्राप्त होते (उत) और जो (तेषाम्) उन जीवों के (परमा) उत्तम (इष्टानि) सुखसिद्ध करने वाले कामों को सिद्ध करता है, उस परमेश्वर की तुम लोग उपासना करो॥२६॥

वेद में ईश्वर को **"विश्वकर्मा" कहा गया है जिसका अर्थ होता है जो सब जगत् का बनाने, धारण, पालन और नाश करनेहारा है।** वेद द्वार प्रतिपादित ईश्वर सम्पूर्ण सृष्टि का कर्ता है। अर्थात् संसार के जितने भी ग्रह, तारे और सौर्य मंडल है। सबका रचयिता ईश्वर ही है।

Brahma-Sutra 1.1.2

जन्माद्यस्य यतः ॥ २ ॥

अर्थ:- ईश्वर सृष्टी का जन्म आदि (बनाने, चलने और विनाश) करने वाला है।

वेदान्त दर्शन के अनुसार भी ईश्वर सृष्टी की रचना, पालन और विनाश करने वाला है।

- इस्लाम

Quran Surah 2 Aayat 22

ٱلَّذِى جَعَلَ لَكُمُ ٱلْأَرْضَ فِرَٰشًا وَٱلسَّمَآءَ بِنَآءً وَأَنزَلَ مِنَ ٱلسَّمَآءِ مَآءً فَأَخْرَجَ بِهِۦ مِنَ ٱلثَّمَرَٰتِ رِزْقًا لَّكُمْ ۖ فَلَا تَجْعَلُوا۟ لِلَّهِ أَندَادًا وَأَنتُمْ تَعْلَمُون ٢٢

जिसने तुम्हारे लिए धरती को एक बिछौना तथा आकाश को एक छत बनाया और आकाश से कुछ पानी उतारा, फिर उससे कई प्रकार के फल तुम्हारी जीविका के लिए पैदा किए। अतः अल्लाह के लिए किसी प्रकार के साझी न बनाओ, जबकि तुम जानते हो।

कुरान अनुसार अल्लाह ने धरती को बिछौना और आकाश को छत बनाया। मुसलमान अल्लाह को धरती और आसमान का बनाने वाला तो मानते हैं पर बेचारे अल्लाह को तो यह भी नहीं पता कि धरती गोल है या चपटी। अल्लाह ने धरती तो बना ली पर धरती गोल है या चपटी ये पता नहीं लगा पाया।

- ईसाईयत

बाइबिल - उत्पत्ति 1:3-5

तब परमेश्वर ने कहा, "उिजयाला हो"† और उिजयाला हो गया। परमेश्वर ने उिजयाले को देखा और वह जान गए िक यह अच्छा है। तब परमेश्वर ने उिजयाले को अंिधयारे से अलग िकया। परमेश्वर ने उिजयाले का नाम "िदन" औरअंिधयारे का नाम "रात" रखा। शाम हई और तब सवेरा हआ। यह पहला िदन था।

यहोवा ने 6 दिन में धरती और असमान को बनाया पहले दिन उसने उजियाला कर दिया। अब आगे देखिये -

बाइबिल - उत्पत्ति 1:16-19

तब परमेश्वर ने दो बड़ी ज्योितयाँबनाई। परमेश्वर ने उन मे ं से बड़ी ज्योित को िदन पर राज करने के िलए बनाया और छोटी को रात पर राज करने के िलए बनाया। परमेश्वर ने तारे भी बनाए। परमेश्वर ने इन ज्योतियों को आकाश मे ं इसिलए रखा िक वेह पृथ्वी पर पर चमके ं । परमेश्वर ने इन ज्योितयों को आकाश मे ं इसिलए रखा िक वह िदन तथा रात पर राज करे ं। इन ज्योितयों ने उिजयाले को अंधकार से अलग िकया और परमेश्वर ने देखा िक यह अच्छा है। तब शाम हई और सवेरा हआ। यह चौथा िदन था।

टिपण्णी:- यहोवा ने पहले ही दिन उजियाला कर दिया था तो फिर अब चौथे दिन फिर से ज्योति अर्थात् सूरज और चाँद बना रहा है। जब पहले ही दिन रौशनी कर दी थी तो फिर चौथे दिन सूरज बनाने का क्या उद्देश्य? या फिर ऐसा हो सकता है कि यहोवा पहले दिन उजियाला कर के भूल गया इसीलिए फिर सूरज बना के चौथे दिन उजाला कर रहा है? चलो एक बार को मान भी ले की सूरज चौथे दिन बना तो सूरज बनने से पहले 3 दिन हुए कैसे? बिना सूरज के ही 3 दिन हो गए

बड़ा विचित्र विज्ञान है। वास्तव में तो यहोवा को खुद कुछ नहीं पता कि वो कर क्या रहा है? और हो क्या रहा है?

निष्कर्ष:- वेद का ईश्वर ही पूर्ण रूप से सृष्टि कर्ता सिद्ध होता है। वेद में धरती को "भुवनस्य" (Rigveda/1/164/35) अर्थात भूगोल कहा गया गया है। मुसलमानों का अल्लाह और ईसाईयों का यहोवा तो धरती का आकार और प्रकार तक नहीं जानते हैं। यहोवा और अल्लाह की सृष्टी रचना किसी बच्चे की कल्पना से अधिक नहीं लगती। इससे यही सिद्ध होता है अल्लाह और यहोवा सृष्टि कर्ता नहीं हो सकते हैं। सिर्फ़ वेद का ईश्वर ही सृष्टिकर्ता हो सकता है।

2. सर्वज्ञ

हमने पूर्व में यह भी देख लिया है सृष्टि अत्यंत जटिल और सटीक है। विज्ञान अनुसार ईश्वर द्वारा बनाई सृष्टि और जीव सबसे जटिल रचनाएं है। जो वस्तु जितनी जटिल होती है, उसे बनाने के लिए उतनी ही बुद्धि की आवश्यकता होती है। उदाहरण के लिए:- हवाई जहाज़ बनाने में साइकिल बनाने की तुलना में अधिक बुद्धि लगती है, क्योंकि एक हवाईजहाज़, एक साइकिल की तुलना में बहुत जटिल है। अर्थात ईश्वर को भी सबसे ज्यादा बुद्धिमान होना चाहिए क्योंकि उनसे जीव और सृष्टि जैसी सबसे ज्यादा जटिल रचनाएं की हैं। और अगर थोड़ा विचार करें तो सबसे ज्यादा बुद्धिमान वही हो सकता है जो सर्वज्ञ हो अर्थात सब जाने वाला हो। इसे ईश्वर का एक गुण सर्वज्ञ सिद्ध होता है।

- सनातन धर्म

Rigveda / 9 / 63 / 20

क॒विं मृ॑जन्ति॒ मर्ज्यं॑ धी॒भिर्विप्रा॑ अव॒स्यव॑: । वृषा॒ कनि॑क्रदर्षति ॥

पदार्थ : (अवस्यवः) रक्षा करनेवाले (विप्राः) मेधावी लोग (धीभिः) बुद्धि द्वारा (मर्ज्यं) शुद्धस्वरूप तथा (कविम्) सर्वज्ञ परमात्मा को (मृजन्ति) ध्यान का विषय बनाते हैं। वह परमात्मा (वृषा) जो कि कामनाओं को वृष्टि करनेवाला है, एवंभूत ईश्वर (कनिक्रत्) वेदवाणी को प्रदान करता हुआ (अर्षति) आनन्द की वृष्टि करता है ॥२०॥

वेद में ईश्वर को "कविम्" कहा गया है जिसका अर्थ सर्वज्ञ परमात्मा होता है। वेद अनुसार ईश्वर सर्वज्ञ है, वह सब जानता है और उसके ज्ञान में न तो कोई कमी है ना ही कोई दोष। वेद के अनुसार ईश्वर सर्वज्ञ ही है।

Yog darshan 1/ 25

तत्र निरतिशयं **सर्वज्ञ**बीजम्॥२५॥

अर्थ : (**तत्र**) उस ईश्वर में (**सर्वज्ञबीजम्**) सर्वज्ञता का बीज (**निरतिशयम्**) अतिशय = अधिकता से रहित अर्थात् अनुपम है। अर्थात् ईश्वर में सर्वज्ञता के कारण अतीन्द्रिय ज्ञान की पराकाष्ठा है॥

योग दर्शन अनुसार भी ईश्वर सर्वज्ञ है।

- इस्लाम

Quran Surah 3 Aayat 142

وَيَعْلَمَ ٱللَّهُ ٱلَّذِينَ جَٰهَدُواْ مِنكُمْ وَيَعْلَمَ ٱلصَّٰبِرِينَ ١٤٢ أَمْ حَسِبْتُمْ أَن تَدْخُلُواْ ٱلْجَنَّةَ وَلَمَّا

क्या तुमने समझ रखा है कि जन्नत में प्रवेश कर जाओगे, जबकि अल्लाह ने अभी यह नहीं परखा है कि तुममें से कौन जिहाद करने वाले हैं और कौन डटे रहने वाले हैं?

कुरान में अल्लाह कहता है की उसने अभी परखा (test) नहीं गया है कि कौन जिहाद करेगा और कौन नहीं? अर्थात् अल्लाह मनुष्यों के मन, इच्छा और उनके विचारों को भी नहीं जनता है उसे यह तक नहीं पता है कौनसा मनुष्य उसके पक्ष में होकर उसके लिय काफ़िरों के खिलाफ़ जिहाद करेगा और कौन उसके खिलाफ़ है, उसे यह जाने के लिय लोगों की परीक्षा लेनी पड़ती है। इससे यही सिद्ध होता है अल्लाह सर्वज्ञ नहीं है।

Quran Surah 8 Aayat 65

يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّبِيُّ حَرِّضِ ٱلْمُؤْمِنِينَ عَلَى ٱلْقِتَالِ ۚ إِن يَكُن مِّنكُمْ عِشْرُونَ صَٰبِرُونَ يَغْلِبُواْ مِاْئَتَيْنِ ۚ وَإِن يَكُن مِّنكُم مِّاْئَةٌ يَغْلِبُوٓاْ أَلْفًا
مِّنَ ٱلَّذِينَ كَفَرُواْ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُونَ ٦٥

ऐ नबी! ईमान वालों को लड़ाई पर उभारें। यदि तुममें से बीस धैर्य रखने वाले हों, तो वे दो सौ पर विजय प्राप्त करेंगे, और यदि तुममें से एक सौ हों, तो वे कुफ़्र करने वालों में से एक हज़ार पर विजय प्राप्त करेंगे। यह इसलिए कि निःसंदेह वे ऐसे लोग हैं जो समझते नहीं।

यह आयात तब अल्लाह ने उतारी थी जब मुसलमान जंग करने जा रहे थे तब अल्लाह कहता है कि 20 मुस्लमान 200 काफिरों पर भारी पड़ेगा। अब अगली आयात देखिये।

Quran Surah 8 Aayat 66

ٱلۡـَٰٔنَ خَفَّفَ ٱللَّهُ عَنكُمۡ وَعَلِمَ أَنَّ فِيكُمۡ ضَعۡفٗاۚ فَإِن يَكُن مِّنكُم مِّاْئَةٞ صَابِرَةٞ يَغۡلِبُواْ مِاْئَتَيۡنِۚ وَإِن يَكُن مِّنكُمۡ أَلۡفٞ يَغۡلِبُوٓاْ أَلۡفَيۡنِ بِإِذۡنِ ٱللَّهِۗ وَٱللَّهُ مَعَ ٱلصَّـٰبِرِينَ ٦٦

अब अल्लाह ने तुम्हारा बोझ हल्का कर दिया और जान लिया कि तुम्हारे अंदर कुछ कमज़ोरी है। तो यदि तुममें से सौ धैर्य रखने वाले हों, तो दो सौ पर विजय प्राप्त करेंगे, और यदि तुममें से एक हज़ार आदमी हों, तो अल्लाह के हुक्म से दो हज़ार पर विजय प्राप्त करेंगे, और अल्लाह धैर्य रखने वालों के साथ है।

उसके बाद जब मुस्लमान जंग में कमज़ोर लगने लगे तो अल्लाह फिर आयात उतारता है और कहता है कि अब हमने जान लिया है की तुम्हारे अन्दर कमज़ोरी है और फिर अपनी बात को ठीक करते हुए बोलता है की 100 मुस्लमान 200 काफिरों पर भरी होंगे। इससे यही सिद्ध होता है अल्लाह बड़ा अज्ञानी है उसे जंग से पहले मुसलमानों की कमज़ोरी के बारे में नहीं पता था बाद में जब मुसलमान कमज़ोर पड़ने लगे तब उसे पता चला कि उनमे कमज़ोरी है। जो उसने पहले कहा था कि 20 मुसलमान 200 काफ़िर पर भारी हैं, वो अपनी इस भूल को ठीक कर के कहता है कि 100 मुसल्मान 200 काफिरों पर भारी हैं। इससे पुनः यही सिद्ध होता है कि अल्लाह बड़ा अज्ञानी है बेचारे से बड़ी गलतियाॅं होती रहती हैं। उसकी गलतियों का फल बेचारे मुसलमानों को झेलना पड़ता है।

- ईसाईयत

बाइबिल - उत्पित 1:3-5

तब यहोवा ने कहा, “उिजयाला हो” और उिजयाला हो गया। यहोवा ने उिजयाले को देखा और वह जान गए कि यह अच्छा है। तब यहोवा ने उिजयाले को अंधियारे से अलग किया। यहोवा ने उिजयाले का नाम “दिन” और अंधियारे का नाम “रात” रखा। शाम हई और तब सवेरा हआ। यह पहला दिन था।

यहोवा ने पहले दिन उजियाला किया और फिर उस उजियाले को देख कर जान गया की उजियाला अच्छा है। यहोवा तो बड़ा अज्ञानी सिद्ध होता है बिचारे को पहले पता ही नहीं था की उजियाले कैसा है जब उसने उजियाले को देखा तब जान पाया की उजियाला तो बड़ा अच्छा है।

बाइबिल - उत्पित 1:9-11

यहोवा ने पुकारा कर आदम (Adam) से पूछा, “तुम कहाँ हो?” आदम ने कहा, “मैंने बाग़ में तेरे आने की आवाज सनी और मै डर गया। मै नंगा था, इसिलए छिप गया।” यहोवा ने आदम (Adam) से पूछा, “तम्हे किसने

बताया कि तम नंगे हो? तम किस कारण से शरमाए? क्या तमने उस विशेष पेड़ का फल खाया जिसे मैने तम्हे न खाने की आज्ञा दी थी?”

यह बात तब की है जब आदम (Adam) ने ज्ञान का फल खा लिया था। उसके बाद जब यहोवा वहाॅं आता है तो आदम छुप जाता है और यहोवा आदम को आवाज़ लगाने लगता है कि तुम कहाॅं हो? भला कैसा परमेश्वर है जिसे ये तक नहीं पता चलता की कौन कहाॅं है? अगर यहोवा को पुलिस बना दिया जाए तो बेचारा पूरा जीवन चोर को आवाज़ ही लगाता रह जायेगा और चोर छुपा रहेगा। इतना अज्ञानी तो मनुष्य भी नहीं होता।

निष्कर्षः- वेद तो ईश्वर को सर्वज्ञ ही स्वीकार करता है। पर मुसलमानों का अल्लाह और ईसाईयों का यहोवा कम'अक़्ल और मूढ़ बुद्धि का ही सिद्ध होता है। अर्थात वेद के ईश्वर के पास ही सृष्टि रचना करने का समस्त ज्ञान सिद्ध होता है।

3. सर्वशक्तिमान

ईश्वर ने सृष्टि की रचना की जो अत्यंत विशाल है। जिसमें हमारी पृथ्वी से लाखों गुना बड़े तारे और ग्रह हैं। और जो वस्तु जितनी विशाल और भारी होती है उसे बनाने और व्यवस्थित करने में उतना ही बल लगता है। ईश्वर ने संसार की सबसे बड़ी और भारी वस्तुओं का निर्माण किया है। अर्थात् सूर्य चंद्रमा आदि को बनाया है और व्यवस्थित किया है। अर्थात ईश्वर सबसे ज्यादा शक्तिशाली है। और जो सबसे ज्यादा शक्तिशाली होता है उसे अपने किसी कार्य को करने के लिय किसी और की आवश्यकता नहीं होती है। इसे यह सिद्ध होता है की ईश्वर का एक गुण सर्वशक्तिमान है।

- सनातन धर्म

Rigveda / 9 / 66 / 10

पव॑मानस्य ते कवे॒ **वाजि॒न्त्सर्गा॑** असृक्षत । अर्व॑न्तो॒ न श्र॑व॒स्यव॑: ॥

(कवे) हे सर्वज्ञ! (वाजिन्) हे सर्वशक्तिमान् परमात्मन् ! (पवमानस्य) सबको पवित्र करनेवाले (ते) आपकी (सर्गाः) अनन्त प्रकार की सृष्टियाँ इस प्रकार (असृक्षत) उत्पन्न होती हैं, (न) जैसे कि (अर्वन्तः) विद्युत् शक्तियाँ अनेक प्रकार से (श्रवस्यवः) प्रवाहित होती हैं ॥१०॥

वेद में ईश्वर को “वाजिन्” अर्थात शक्ति स्वरुप कहा गया है इसे सिद्ध होता है वेद अनुसार ईश्वर सर्वशक्तिमान है। और वो अपने किसी कार्य को करने के लिय किसी और की सहायता नहीं लेता है।

- इस्लाम

Quran Surah 69 Aayat 17

وَٱلۡمَلَكُ عَلَىٰٓ أَرۡجَآئِهَاۚ وَيَحۡمِلُ عَرۡشَ رَبِّكَ فَوۡقَهُمۡ يَوۡمَئِذٖ ثَمَٰنِيَةٞ ١٧

और फ़रिश्ते उसके किनारों पर होंगे तथा उस दिन आपके पालनहार का 'अर्श (सिंहासन) आठ फ़रिश्ते अपने ऊपर उठाए हुए होंगे।

कुरान अनुसार अल्लाह के सिंहासन को 8 फ़रिश्तों ने उठा रखा है। जब अल्लाह ख़ुद का सिंहासन उठाने तक में समर्थ नहीं बेचारे को उसके लिए भी 8 फ़रिश्ते लगाने पड़ते हैं। तो अल्लाह का सर्वशक्तिमान होना तो बहुत दूर की बात है। अल्लाह को तो यही चिंता लगी रहती होगी की ये 8 फ़रिस्ते कभी आपस में लड़ भिड पड़े और अल्लाह का अर्श उनके हाथ से छूट गया तो अल्लाह सीधा सातवे असमान से गिरेगा और इतनी ऊँचाई से बचना बड़ा कठिन हो जायेगा।

Quran Surah 6 Aayat 101

بَدِيعُ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضِۖ أَنَّىٰ يَكُونُ لَهُۥ وَلَدٞ وَلَمۡ تَكُن لَّهُۥ صَٰحِبَةٗۖ وَخَلَقَ كُلَّ شَيۡءٖۖ وَهُوَ بِكُلِّ شَيۡءٍ عَلِيمٞ ١٠١

वह आकाशों तथा धरती का आविष्कारक है, उसकी संतान कैसे होगी, जबकि उसकी कोई पत्नी नहीं? तथा उसी ने हर चीज़ पैदा की और वह प्रत्येक वस्तु को भली-भाँति जानने वाला है।

अल्लाह कुरआन में एक तर्क देता है और कहता है की जब उसकी कोई पत्नी ही नहीं है तो उसका कोई बच्चा कैसे होगा इसे यही सिद्ध होता है अल्लाह बड़ा मजबूर है उसको संतान करने के लिए कोई पत्नी ही नहीं मिल रही है। यह बात अल्लाह ने आर्यों से कही होती तो आर्य अवश्य अल्लाह का आर्य समाज मंदिर में शुद्धि कर विवाह करवा देते, फिर उसे सन्तान उत्पत्ति में कोई समस्या नहीं होती।

- ईसाईयत

बाइबिल - उत्पित 2:1-2

इस तरह पृथ्वी, आकाश और उसकी प्रत्येक वस्तकी रचना पूरी हई। परमेश्वर ने अपने किए जा रहे काम को पूरा कर लिया। अतः सातवे दिन परमेश्वर ने अपने काम से विश्राम किया।

जिस प्रकार एक मजदूर अपने काम को कर के थक जाता है और फिर विश्राम करता है। वैसे ही जब यहोवा धरती और असमान को बना का थक गया तो बिचारा सातवे दिन विश्राम करने लगा। यहोवा का सर्वशक्तिमान होना तो दूर की बात है बिचारा पहले ही थका हुआ है।

AJAY ARYA

बाइबिल - उत्पित 27:46

फिर समूची धरती पर दोपहर से तीन बजे तक अन्धेरा छाया रहा। कोई तीन बजे के आस-पास यीशु ने ऊँचे स्वर मे पुकारा "एली, एली, लमा शबक्तनी।" अथार्त, "मेरे परमेश्वर, मेरे परमेश्वर, तूने मझे क्यों छोड़ दिया"?

जब यीशु (jesus) जो सूली पर चढ़ाया जा रहा था तब जीसस डर के मरे चिलाने लगा और अपने ईश्वर को बुलाने लगा और कहने लगा की तुमने मुझे अकेला क्यों छोड़ दिया। भाला ईश्वर भी डर ले मारे चिल्लाता है क्या? अगर जीसस ईश्वर होता तो मारा क्यों जाता? और डर के मारे थर थर क्यों कंपता? भाला ईश्वर से भी ज्यादा शक्तिशाली कोई होता है क्या? जीसस से ज्यादा साहसी तो छत्रपति समभा जी महाराज थे जिन्हें औरंगज़ेब ने हफ्तों तक तडपाया था उनके अंग अंग को कटा था फिर भी उन्होंने जीवन की भीख नहीं मांगी ना उनकी आखों में औरंगजेब कभी भय देख पाया। जीसस कोई ईश्वर नहीं बस एक डरपोक इंसान ही सिद्ध होता।

निष्कर्ष:- वेद का ईश्वर अपने सभी कार्यों को बिना किसी की सहायता से पूर्ण करने से सर्वशक्तिमान सिद्ध होता है। वही मुसलमानों का अल्लाह और ईसाईयों का यहोवा जगह जगह लाचार और अल्प शक्ति वाला सिद्ध होते है। अर्थत वेद के ईश्वर में ही सृष्टि रचना का सामर्थ्य है।

4. सर्वयापक

ईश्वर जब सृष्टि रचना करता है। तो फिर सृष्टि का पालन भी करता है अर्थात सृष्टि की व्यवस्था ठीक ठीक चलती रहे इसका भी ध्यान रखता है। पर संसार इतना विशाल और व्यापक है जिसमे सैकड़ों व्यवस्थाएं है। इन्हें एक स्थान पर बैठ कर नहीं संभाला जा सकता हैं। उधारण के लिय जब तक छात्रों की कक्षा में अध्यापक रहता है तब तक कक्षा व्यवस्थित रहती है। जैसे ही अध्यापक जाता है कक्षा में सब अव्यवस्थित हो जाती है। इसिप्रकार अगर ईश्वर को कण कण को व्यवस्थित करना है तो कण कण में विराजमान होना होगा। अर्थात् ईश्वर का एक गुण सर्वयापक है।

- सनातन धर्म

Yajurveda / 32 / 4

एषो ह॑ दे॒वः **प्र॒दिशोऽ नु॒ सर्वा॒**ः पूर्वो॑ ह जा॒तः सऽ उ॒ गर्भेऽ अ॒न्तः। सऽ एव॑ जा॒तः स ज॑नि॒ष्यमा॑णः प्र॒त्यङ् जना॑स्तिष्ठति स॒र्वतो॑मुखः॥

पदार्थ : हे (जनाः) विद्वानो! (एषः) यह (ह) प्रसिद्ध परमात्मा (देवः) उत्तम स्वरूप (सर्वाः) सब दिशा और (प्रदिशः) विदिशाओं को (अनु) अनुकूलता से व्याप्त होके (सः) (उ) वही (गर्भे) अन्तःकरण के (अन्तः) बीच (पूर्वः) प्रथम कल्प के आदि में (ह) प्रसिद्ध (जातः) प्रकटता को प्राप्त हुआ, (सः, एव) वही (जातः) प्रसिद्ध हुआ

(सः) वह (जनिष्यमाणः) आगामी कल्पों में प्रथम प्रसिद्धि को प्राप्त होगा। (सर्वतोमुखः) सब ओर से मुखादि अवयवों वाला अर्थात् मुखादि इन्द्रियों के काम सर्वत्र करता (प्रत्यङ्) प्रत्येक पदार्थ को प्राप्त हुआ (तिष्ठति) अचल सर्वत्र स्थिर है, वही तुम लोगों को उपासना करने और जानने योग्य है॥४॥

वेद में ईश्वर को (सर्वाः) सब दिशा और (प्रदिशः) विदिशाओं में व्याप्त कहा गया है। अर्थात ईश्वर सभी दिशाओ में है और जहा कोई दिशा नहीं वह भी है। वेद अनुसार ईश्वर सर्व्यापक सिद्ध होता है।

- इस्लाम

Quran Surah 25 Aayat 59

٥٩ ٱلَّذِى خَلَقَ ٱلسَّمَـٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِى سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ ٱسْتَوَىٰ عَلَى ٱلْعَرْشِ ۚ ٱلرَّحْمَـٰنُ فَسْـَٔلْ بِهِۦ خَبِيرًا

जिसने आकाशों तथा धरती को और जो कुछ उनके बीच है, छह दिनों में पैदा किया, फिर अर्श (सिंहासन) पर बुलंद हुआ। (वह) बहुत दयालु है। अतः उसके बारे में किसी पूर्ण जानकार से पूछिए।

कुरान अनुसार अल्लाह से धरती और असमान को 6 दिन में बनाया फिर जा कर अपने अर्श पर बैठ गया। वैसे तो अल्लाह ने 6 दिन में धरती और असमान बनाया विज्ञानं की हतया तो यही हो जाती है। पर बनाने के बाद अर्श पर जा कर बैठ गया। इसे तो यही सिद्ध होता है की अल्लाह एक जगह पर विराजमान है वो सर्व्यापक नहीं इसी कारण से जो दोष हमने अल्लाह के पूर्व में देखे वह उत्पपात होते है। सृष्टी कर्ता, सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान होने के लिय सर्व्यापक होना आवश्यक है यह हम पूर्व में ही सिद्ध कर चुके है।

- ईसाईयत

बाइबिल - उत्पित 2:1-2

तब यहोवा ने कहा, "मैने बार–बार सना है कि सदोम और अमोरा के लोग बहुत बरे है। इसिलए मै वहाँ जाऊँगा और देखूगा कि क्या हालत उतनी ही खराब है जितनी मैने सनी है। तब मै ठीक–ठीक जान लूगा।"

बाइबिल में यहोवा कहता ही की उसने सुना है की सदोम और अमोरा नमक नगर के लोग बहुत बुरे है अब ये बात सत्य है की नहीं ये जाने के लिय वो वह जा कर देखेगा। यहोवा भी वारदात के बाद पहुचने वाली पुलिस की तरह है। जब भी उसे कोई ख़राब मिलती है तो बिचारा पुलिस की तरह वारदात की जाच करने जाता है और जब तक पहुचता होगा तब तक अपराधी कही और भाग जाता होगा फिर उसको खोजने जाना पड़ता होगा। यहोवा के जीवन के इस अपार कास्ट का

कारण उसका सर्व्यापक ना होना ही है। अगर वो सर्व्यापक होता तो सब पर एक साथ नजर रख पता।

निष्कर्ष:- वेद के अनुसार ईश्वर सर्व्यापक हैं और कण कण में विराजमान है। कण कण में होने से वो कण कण को जानता भी है और व्यवस्थित भी कर पता है। वही मुसलमानों का अल्लाह और ईसाईयों या यहोवा एक देशीय है। जिनके कारण न तो उन्हें हर जगह का ज्ञान है और ना ही वो हर चीज को एक साथ व्यवस्थित कर सकते है, और बार बार उनसे गड़बड़िया होती रहती है। अर्थात वेद का ईश्वर ही सर्वयापक होने से सम्पूर्ण जगत को एक साथ एक ही समय पे व्यवस्थित करने का सामर्थ्य रखता है।

5. निराकार

ईश्वर सर्वयापक हैं। तो फिर प्रश्न आता है जब ईश्वर हर जगह है तो फिर हमारी उससे टक्कर क्यों नही होती है। जिस प्रकार जब दो वस्तुएं एक स्थान पर आती है तो उन दोनों की आपस में टक्कर हो जाती है। फिर ईश्वर से भी हमारी टक्कर होनी चाहिए थी क्योंकि वो तो हर जगह है तो फिर हर जगह उसे टक्कर होनी चाहिए थी। इसका सामान्य सा उत्तर है ईश्वर से टक्कर नहीं होती क्योंकि ईश्वर निराकार है। जिस प्रकार आकाश सर्व्यपक है पर उसे टक्कर नहीं होती क्योंकि आकाश निराकार है वैसे ही ईश्वर भी सर्व्यपक है पर उसे टक्कर नहीं होती क्योंकि ईश्वर भी आकाश की तरह निराकार है। सिर्फ निराकर वस्तु ही सर्वयापक हो सकती है क्योंकि हर साकार वस्तु की अपनी एक सीमा रेखा होती है। और सीमा में बंधने वाला कभी सर्व्यापक नही हो सकता। अर्थात ईश्वर का एक गुण निराकार सिद्ध होता है।

- सनातन धर्म

Yajurveda / 40 / 8

स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरꣳ शुद्धमपापविद्धम्।कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूर्याथातथ्यतोऽर्थान् व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः॥८॥

पदार्थ : हे मनुष्यो! जो ब्रह्म (शुक्रम्) शीघ्रकारी सर्वशक्तिमान् (अकायम्) स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीररहित (अव्रणम्) छिद्ररहित और नहीं छेद करने योग्य (अस्नाविरम्) नाड़ी आदि के साथ सम्बन्धरूप बन्धन से रहित (शुद्धम्) अविद्यादि दोषों से रहित होने से सदा पवित्र और (अपापविद्धम्) जो पापयुक्त, पापकारी और पाप में प्रीति करनेवाला कभी नहीं होता (परि, अगात्) सब ओर से व्याप्त जो (कविः) सर्वत्र (मनीषी) सब जीवों के मनों की वृत्तियों को जाननेवाला (परिभूः) दुष्ट पापियों का तिरस्कार करनेवाला और (स्वयम्भूः) अनादि स्वरूप जिसकी संयोग से उत्पत्ति, वियोग से विनाश, माता, पिता, गर्भवास, जन्म, वृद्धि और मरण नहीं होते, वह परमात्मा (शाश्वतीभ्यः) सनातन अनादिस्वरूप अपने-अपने स्वरूप से उत्पत्ति और विनाशरहित (समाभ्यः) प्रजाओं के

लिये (याथातथ्यतः) यथार्थ भाव से (अर्थान्) वेद द्वारा सब पदार्थों को (व्यदधात्) विशेष कर बनाता है, (सः) वही परमेश्वर तुम लोगों को उपासना करने के योग्य है॥८॥

वेद में ईश्वर को "अकायम्" कहा गया है जिसका अर्थ होता है जो काया रहित हो जिसका कोई रंग रूप, शारीर अदि ना हो। वेद अनुसार ईश्वर निराकार सिद्ध होता है।

- इस्लाम

Quran Surah 38 Aayat 75

٧٥ ۖ خَلَقْتُ بِيَدَىَّ ۖ أَسْتَكْبَرْتَ أَمْ كُنتَ مِنَ ٱلْعَالِينَ تَسْجُدَ لِمَا مَنَعَكَ أَن قَالَ يَـٰٓإِبْلِيسُ مَا

(अल्लाह ने) कहा: ऐ इबलीस! तूझे किस चीज़ ने रोका कि तू उसके लिए सजदा करे जिसे मैंने अपने दोनों हाथों से बनाया? क्या तू बड़ा बन गया, या तू था ही ऊँचे लोगों में से?

Sahih al-Bukhari 6227 Narrated Abu Huraira: The Prophet (ﷺ) said, "Allah created Adam in His picture, sixty cubits (about 30meters) in height.

कुरान और हदीस के अनुसार अल्लाह ने आदम को अपने दोनों हाथो से बनाया और अपनी ही शकल का बनाया और 30 मीटर ऊचा बनाया अर्थात अल्लाह भी मनुष्यों जैसा है, मनुष्यों जैसे ही उसके भी दो हाथ है और अल्लाह भी आदम की ही तरह 30 मीटर लम्बा है। इसे यही सिद्ध होता है अल्लाह मनुष्यों जैसा ही साकार है बस थोडा लम्बा ज्यादा है बाकी तो अल्लाह मनुष्य सामान ही है। यही उसके अज्ञान और मूर्खता का कारण भी है।

- ईसाईयत

बाइबिल - उत्पित 9:26

तब परमेश्वर ने कहा, "अब हम मनष्य बनाएं। हम मनष्य को अपने स्वरूप जैसा बनाएगे। मनष्य हमारी तरह होगा।

यहोवा ने भी अल्लाह की तरह ही आदम को अपनी शकल में बनाया है अर्थात यहोवा भी मनुष्य की ही तरह ही है और साकार है। और जीसस तो खुद मनुष्य ही था उसके लिय तो प्रमाण की आवश्यकता भी नहीं है।

निष्कर्ष:- वेद ईश्वर को काया रहित व निराकार ही स्वीकार करता है। वहीं मुसलमानों का अल्लाह और ईसाईयों का यहोवा साकार है जिसके कारण वो सर्व्यपक नहीं हो सकता इसीलिए वह दर दर भटकता है और गड़बड़िया करता रहता है। अर्थत्य वेद का ईश्वर ही निराकार होने से सर्व्यपक है

और सर्व्यपक होने सर्वज्ञ सिद्ध होता है। जिसके कारण वो सृष्टि का नियम पूर्वक पालन करने में सामर्थ्य होता है।

6. आनंद स्वरूप

ईश्वर आनंद स्वरूप है अर्थात वह सदा आनंद में रहता है उसके अंदर खुद के लिय कोई इच्छा नहीं है। क्योंकि वह सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, सर्व्यपक है। अब जो सबसे ज्यादा बुद्धिमान बलवान और व्यापक है उसे भला किस चीज की आवश्यकता हो सकती है। उसे तो सब प्राप्त है ऐसा कुछ भी नहीं जो उससे परे हो। वह सृष्टि भी जीवात्मनों के कल्याण के लिय बनातन है उसका स्वयं का कोई स्वार्थ या लाभ नहीं वह तो सदा आनंद में ही रहता है। अर्थात ईश्वर का एक गुण आनंद स्वरूप है।

- सनातन धर्म

Rigveda / 4 / 26 / 3

अ॒हं पुरो॑ **मन्दसा॒नो** व्यै॑रं॒ नव॑ सा॒कं न॑व॒तीः शम्ब॑रस्य। श॒त॒त॒मं वे॒श्यं॑ स॒र्वता॑ता॒ दिवो॑दासमतिथि॒ग्वं यदाव॑म् ॥३॥

पदार्थ : हे मनुष्यो ! जो (मन्दसानः) आनन्दस्वरूप और आनन्द देनेवाला (अहम्) मैं जगदीश्वर (पुरः) प्रथम (शम्बरस्य) मेघ के (शततमम्) अत्यन्त असंख्यात (वेश्यम्) उत्तम वेशों अर्थात् प्रवेशों में उत्पन्न (नव, नवतीः) निन्नानवे पदार्थों को (साकम्) साथ (वि, ऐरम्) प्रेरणा करूँ (सर्वताता) सब में ही मिलने योग्य जगत् में (यत्) जिस (दिवोदासम्) विज्ञानस्वरूप प्रकाश के देनेवाले (अतिथिग्वम्) अतिथियों को प्राप्त हो वा प्राप्त करावे उसकी (आवम्) रक्षा करूँ, उस मेरी उपासना करो और वह आनन्दयुक्त होता है ॥३॥

वेद में ईश्वर को "मन्दसानः" कहा गया है जिसका अर्थ होता है आनन्दस्वरूप और आनन्द देनेवाला। वेद अनुसार ईश्वर आनंदस्वरूप सिद्ध होता है। अर्थात उसके अंदर कोई लालच, इच्छा या किसी प्रकार का कोई स्वार्थ नहीं है।

- इस्लाम

Quran Surah 8 Aayat 30

٣٠ ۞ وَإِذْ يَمْكُرُ بِكَ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ لِيُثْبِتُوكَ أَوْ يَقْتُلُوكَ أَوْ يُخْرِجُوكَ ۚ وَيَمْكُرُونَ وَيَمْكُرُ ٱللَّهُ ۖ وَٱللَّهُ خَيْرُ ٱلْمَـٰكِرِينَ

और याद करो जब इनकार करनेवाले तुम्हारे साथ चालें चल रहे थे कि तम्हें क़ैद रखें या तुम्हे क़त्ल कर दें या तुम्हे निकाल बाहर करे। वे अपनी चालें चल रहे थे और अल्लाह भी अपनी चाल चल रहा था। अल्लाह सबसे बड़ मक्कार है

कुरान अनुसार अल्लाह चाले चलता है और वो मक्कारों में भी सबसे बड़ा मक्कार है। अब या तो अल्लाह आनंद स्वरुप, निस्वार्थी और निष्पाप हो सकता है या फिर मक्कार हो सकता है।

Quran Surah 8 Aayat 30

٢٤٥ ۞مَّن ذَا ٱلَّذِى يُقۡرِضُ ٱللَّهَ قَرۡضًا حَسَنًا فَيُضَـٰعِفَهُۥ لَهُۥٓ أَضۡعَافًا كَثِيرَةً۬ۚ وَٱللَّهُ يَقۡبِضُ وَيَبۡصُۜطُ وَإِلَيۡهِ تُرۡجَعُونَ

कौन है वह जो अल्लाह को अच्छा क़र्ज़ दे, तो वह उसे उसके लिए बहुत अधिक गुना बढ़ा दे, तथा अल्लाह ही तंगी करता और विस्तार करता है और तुम उसी की ओर लौटाए जाओगे।

अल्लाह लोगों से कर्जा भी मांगता है। पर लोग भी समझदार है उन्हें भी पता है अल्लाह सबसे बड़ा मक्कार है वो दिया हुआ कर्ज हजम भी कर सकता है। इसीलिए वो भी अल्लाह को कर्जा देने से बचते है। अल्लाह का आनंद स्वरुप होना तो बहुत दूर की बात है पहले बिचारा किसी से कर्जा ले कर अपना जीवन यापन ही कर ले यही बहुत बड़ी बात है।

- ईसाईयत

बाइबिल - उत्पित 3:2-3

हम बाग़ के पेड़ों से फल खा सकते है। लिकिन एक पेड़ है जिसके फल हम लोग नहीं खा सकते है। यहोवा परमेश्वर ने हम लोगों से कहा, 'बाग के बीच के पेड़ के फल तम नहीं खा सकते, तम उसे छूना भी नहीं, नहीं तो मर जाओगे।'

धयान देना यहोवा ने आदम और हवा (eve) को बोला था की भाग के बीचमें जो पेड़ है उसका फल खाने से वह दोनों मर जायेंगे। अब आगे देखिये -

बाइबिल - उत्पित 3:6-7

तब स्त्री ने पेड़ से फल लिया और उसे खाया। उसका पती भी उसके साथ था इसिलए उसने कछ फल उसे दिया और उसने उसे खाया। तब परुष और स्त्री दोनों बदल गए। उनकी आँखे खल गई और उन्होंने वस्तओं को भिन्न दृष्टी से देखा। उन्होंने देखा कि उनके कपड़े नहीं है, वे नंगे है। इसिलए उन्होंने कछ अंजीर के पत्ते लेकर उन्हे जोड़ा और कपड़ो के स्थान पर अपने लिय पहना।

उसके पश्चात जब आदम और हवा दोनों ने फल खा लिय तो दोनों बुद्धिमान हो गए वह सही गलत के बारे में जान गए वो ये भी जान गए की वो नंगे है। इसका यही अर्थ है यहोवा झूठा और लालची है उसने झूठ बोला की उस फल को खाने से वह दोनों मर जायेंगे बल्कि सत्य तो ये था उस फल को खाने से दोनों बुद्धिमान हो गए इसका यही मतलब है यहोवा मनुष्यों को मूर्ख रखना चाहता था। यहोव भी अल्लाह की ही तरह मक्कार सिद्ध होता है।

बाइबिल - मत्ती 10:34-36

"यह मत सोचो कि मै धरती पर शांति लाने आया हू। शांति नहीं बिल्क मै तलवार का आवाहन करने आया हू। मै यह करने आया हू:

'पुत्र, पिता के विरोध मे,

पुत्री, माँ के विरोध मे,

बहू , सास के विरोध मे होंगे।

मनष्य के शत्रु, उसके अपने घर के ही लोग होंगे।

यीशु (jesus) भी अल्लाह की ही तरह चालें चलता है उसका उद्देश्य भी लोगों को आपस में लडवाना है लोगों को अपनी माँ बाप बहन भाई से ही शत्रुता करवाना है। एसे गिरे हुए और गंदे परियोजन वाला को कोई लालची और मक्कार ही हो सकता है।

निष्कर्ष:- वेद अनुसार ईश्वर सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, सर्व्यपक, और निराकर होने के कारण आनंद स्वरूप है। उसके अंदर कोई राग, लालच, इच्छा, स्वार्थ जैसे गुण नहीं है। वहीं मुसलमानों का अल्लाह और ईसाईयों का यहोवा तथा उसका पुत्र जीसस लालची, स्वार्थी और व्यापारी किस्म के है। उनके अंदर मनुष्यो के समान इच्छाएं है जिसको वो पूरा करने में लगे रहते है और कई बार अपनी इच्छाओं को पूरा करने के लिय मनुष्यो की ही तरह छल कपट आदि भी करते है। अर्थात सिर्फ वेदों का ईश्वर ही आनंद स्वरूप सिद्ध होता है।

7. न्यायकारी

ईश्वर सर्वज्ञ सबसे ज्यादा बुद्धिमान, सर्वशक्तिमान सबसे ज्यादा बलवान और आनंद स्वरूप यानी इच्छा रहित निस्वार्थी है। और अगर किसी में भी यह 3 गुण होंगे तो वह सदा न्यायकारी ही होगा। क्योंकि वह अपनी बुद्धि से सही निर्णय ले पायेगा, अपने बाल से न्याय को स्थापित कर पायेगा और निस्वार्थी होने से वो कभी अन्याय नहीं करेगा। अर्थात् ईश्वर का एक गुण न्याय करी है क्योंकि वह सबसे अधिक बुद्धिमान, बलवान और निस्वार्थी है।

- सनातन धर्म

Atharvaveda / 13 / 4 / 5

सो अ॒ग्निः स उ॒ सूर्य॒ः स उं॑ ए॒व म॑हाय॒मः ॥ 5॥

पदार्थ : (सः) वह [परमेश्वर] (अग्निः) व्यापकः (सः उ) वही (सूर्यः) प्रेरक, (सः उ) वही (एव) निश्चय करके (महायमः) बड़ा न्यायकारी है ॥५॥"

वेद में ईश्वर को "महायम:" कहा गया है जिसका अर्थ होता है सबसे महान या बड़ा न्यायकारी। वेद अनुसार ईश्वर न्यायकरी है। अर्थात वह कभी अन्याय नहीं करता है।

- इस्लाम

Quran Surah 8 Aayat 30

١٠٠ ۞وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ أَن تُؤْمِنَ إِلَّا بِإِذْنِ ٱللَّهِ ۚ وَيَجْعَلُ ٱلرِّجْسَ عَلَى ٱلَّذِينَ لَا يَعْقِلُون

किसी प्राणी के लिए यह संभव नहीं है कि वह अल्लाह की अनुमति के बिना ईमान लाए और वह उन लोगों पर मलिनता डाल देता है, जो समझ नहीं रखते।

कुरान अनुसार अल्लाह की मर्जी के बिना कोई व्यक्ति उस पर ईमान नहीं ला सकता है अर्थात सिर्फ वही व्यक्ति मुस्लमान बन सकता है जिसको अल्लाह मुस्लमान बनाना चाहे। बड़ा अन्यायकारी खेल है अल्लाह का वो पहले तो लोगों को अपनी मर्जी से मुस्लमान और काफ़िर बनता है और फिर अपनी मर्जी से ही काफिरों को नारख में प्रताड़ित करता है और मुसलमानों को जन्नत देता है। अल्लाह की गलती का भी फल मासूम काफिरों को भरना पड़ता है।

Sahih al-Bukhari 7487- Narrated Abu Dharr:
The Prophet (ﷺ) said, Gabriel came to me and gave me the glad tidings that anyone who died without worshipping anything besides Allah**, would enter Paradise**. I asked (Gabriel), 'Even if he committed theft, **and even if he committed illegal sexual intercourse?' He said, '(Yes),** even if he committed theft, and even if he Committed illegal sexual intercourse."

हदीस में महुम्मद कहता है की अगर कोई मुस्लमान चोर भी हो, बलात्कारी भी हो कितना ही नीच आदमी क्यों ना हो अल्लाह उसे जन्नत ही देगा। इसे बड़ा अत्याचार क्या हो सकता है की एक बलात्कारी को तो अल्लाह जन्नत में डालता है और एक सज्जन कल्याणकारी काफ़िर को भी नर्ख की आग में जलाता है और प्रताड़ित करता है। उसके लिए ओसामा बिन लादेन जैसे आतंकवादी तो जन्नत के हक दार है पर भगत सिंह जैसे वीरो को वो नर्ख में प्रताड़ित करता है। इसे अल्लाह बस एक क्रूर अत्याचारी सिद्ध होता है।

AJAYARYA

बाइबिल - उत्पित 6:5-7

यहोवा ने देखा कि पृथ्वी पर मनष्य बहुत अिधक पापी है। यहोवा ने देखा कि मनष्य लगातार बुरी बाते ही सोचता है। यहोवा को इस बात का दःख हआ, कि मैने पृथ्वी पर मनष्यों को क्यों बनाया? यहोवा इस बात से बहत दःखी हुआ। इसिलए यहोवा ने कहा,"मै अपनी बनाई पृथ्वी के सारे लोगों को खतम कर दूगा। मै हर एक व्यिक्त, जानवर और पृथ्वी पर रेगने वाले हर एक जीव जंतु को खतम करूँगा। मै आकाश के पिक्षयों को भी खतम करुँगा। कयों? क्यों कि मै इस बात से दःखी हू। मैने इन सभी चीजों को बनाया।"

यहोवा ने एक दिन अपनी बनाई धरती को देख बहुत दुखी हो गया और कहने लगा की, मै सब कुछ ख़तम कर दूंगा हर मनुष्य को ख़तम कर दूंगा यहाँ तक की सभी जानवरों को भी ख़तम कर दूंगा। जब सृष्टी ठीक ठीक बनाना इसके बस की नहीं थी तो बनाई क्यों? अब बना दी तो बच्चो जैसा दुखी हो रहा है और कह रहा है मै सब ख़तम कर दूंगा। भाला जानवरों ने इसका क्या बिगाड़ा? और बिचारे बच्चों का पाप में क्या दोष? जो बच्चे अभी गर्व में है उनका क्या दोष? खुद दुखी है तो इसका ये मतलब है क्या की सबको ख़त्म कर देगा? सब पर इतना बड़ा अत्याचार कर देगा इतना बड़ा अन्याय करना परमात्मा का गुण है क्या? इसे यहोवा भी घोर अत्याचारी सिद्ध होता है।

निष्कर्ष :- वेद का ईश्वर सदा न्याय करता है, उसके लिय सब मनुष्य समान है। उसके लिय न कोई प्रिय है ना ही अप्रिय है वो तो कर्म अनुसार ही फल और दंड देता है। वहीं मुसलमानों का अल्लाह बलात्कारी मुसल्मान तक को जन्नत दे देता है और एक सज्जन काफिर हिंदू को जहानम में जलाता है। इसी प्रकार यहोवा तथा उसका पुत्र Jesus भी मनुष्यों और सभी जीव जन्तुओ पर अत्याचार करते है। अर्थात् सिर्फ वेद का ईश्वर ही न्यायकरी सिद्ध होता है, जो कभी कर्म से हट कर न तो फल देता है ना ही दंड देता है वो हमेशा न्याय करता है।

➢ भ्रांति निवारण

मुस्लिम प्रश्नकर्ता:- वेद का ईश्वर पापों को क्षमा ही नहीं करता है इसका अर्थ है वो दयालु नहीं है। अल्लाह अपने मत के लोगों के बड़े से बड़े पापों को भी क्षमा कर देता है। उन्हें जन्नत दे कर उनपर अपार दया करते हैं वह बड़ा दयालु है।

उत्तर:- पापो को क्षमा करना कभी दया नहीं हो सकती यह सिर्फ अन्याय है। अल्लाह बालातारी मुसल्मान तक को जन्नत देता हैं। पर देश पर मर मिटने वाले क्रांतिकारियों और जवानों को नर्ख में प्रताड़ित करता है। इसे तुम दया कहते हो? यह तो महा क्रूरता और अत्याचार है। मान लो कल को कोई तुम्हारी बहन बेटी के साथ बलात्कार कर दे और तुम court जाओ वहां judge उस बलात्कारी को क्षमा कर दे क्या तुम उस judge को दयालु कहोगे? पापों को क्षमा करना सिर्फ क्रूरता अत्याचार और अन्याय का प्रतीक है। ईश्वर कभी ऐसा नहीं हो सकता।

मुस्लिम प्रश्नकर्ता:- इसका यही मतलब है ईश्वर दयालु नहीं है। क्योंकि वो पापों को क्षमा नहीं करता है।

उत्तर:- ईश्वर निसंधय दयालु है। पर वैसे दयालु नहीं जैसा तुम समझते हो। ईश्वर ने जीवो के लिय इतना सुंदर जगत बनाया है, वह निस्वार्थ भाव से सबको उनके कर्मों के अनुसार फल देता है। वह सबका पालनहार है। क्या यह ईश्वर की दया नहीं है? बिलकुल है। इसीलिए ईश्वर का एक गुण दयालु भी है।

- अभय, नित्य और पवित्र है।

सिर्फ वेद का ही ईश्वर अभय, नित्य और पवित्र हो सकता है। क्योंकि अभय सर्फ वो हो सकता है वो सर्वशक्तिमान हो और वेद का ईश्वर ही सर्वशक्तिमान है। मुसलमानों का अल्लाह और ईसाईयों का Jesus तो इतने दुर्बल है की अल्लाह तो बिचारा अपना तख्त तक नही उठा सकता इसके लिए भी 8 फरिश्तों का सहारा लेना पड़ता है, और जीसस के तो क्या कहने जब जीसस को फांसी पर चढ़ाया जा रहा था तब जीसस डर के मारे चिल्लाता है और कहता है, यहोवा तूने मुझे क्यों अकेला छोड़ दिया। भला मौत के डर से चिल्लाने वाला यहोवा अभय कैसे हो सकता है?

नित्य भी सिर्फ वही हो सकता है जो वास्ताविक ईश्वर हो और वास्ताविक ईश्वर तो सिर्फ वेद का ईश्वर ही सिद्ध होता है। अल्लाह और यहोवा तो एक मूर्ख कल्पना ही सिद्ध होते है। और कल्पना कभी नित्य नहीं होती।

पवित्र भी सिर्फ वो हो सकता है जो आनंद स्वरूप हो निस्वार्थी हो, यह गुण भी सिर्फ वेद के ईश्वर में ही सिद्ध होते है। कुरान तो अल्लाह को मक्कारो में भी सबसे बड़ा मक्कार कहा गया है। अब या तो कोई पवित्र हो सकता है या फिर मक्कार। यहोवा के पवित्र होने का कोई सवाल ही नहीं उठता है। जो अदम को बना कर उसी की पसली से हवा को बनाता है अर्थात् वह उसकी पुत्री हुई और उन दोनो का विवाह करवा देता है। फिर उनके बच्ची भी आगे चल के आपस में सम्भोग करते है (यह कहनी मुसल्मान भी ज्यों की त्यों मानते है)। भला इतना नीच कर्म करवाने वाला पवित्र कैसे हो सकता है?

निष्कर्ष:- सिर्फ वेद का ईश्वर ही अभय, नित्य और पवित्र सिद्ध होता है। इस प्रकार ईश्वर के कुल 11 गुण सिद्ध होते है। अर्थात् ईश्वर सृष्टिकर्ता, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, सर्वयापक, निराकार, आनंद स्वरूप, न्यायकारी, दयालु, अभय, नित्य और पवित्र है। और यह सारे गुण सिर्फ वेद के ईश्वर पर ही घटते हैं। अर्थात् सनातन वैदिक धर्म का ईश्वर ही सच्चा ईश्वर है।